# आखिर ये सिलसिला कब तक चलता रहेगा.....

चैताली

साल 2005 दिसम्बर का महीना, मुझे बवाना में सर्वे का काम शुरू करना था। मुझे पहली बार बवाना देखना था ताकि रोज़ घर से आ जा सकूं। *जागोरी* के बारे में मैं कुछ भी नहीं जानती थी। इतना पता था कि यह संस्था महिलाओं के मुद्दे पर काम करती है, लेकिन किस तरह, कैसे, कहां कहां, किन लोगों के साथ इसका कोई अन्दाज़ा नहीं था। दिसम्बर का महीना बीत रहा था और मैं परेशान हो रही थी कि क्यों *जागोरी* से अभी तक कोई बुलावा नहीं आया? मैं और इन्तज़ार नहीं कर सकी और गौतम को फ़ोन किया। तब पता चला कि बवाना बी-ब्लॉक में कुछ दिन पहले आग लग गई थी। *जागोरी* की तरफ़ से बवाना में रिलीफ़ का काम चल रहा है, अगर मैं चाहूं तो इस काम में शामिल हो सकती हूं।

बवाना में आग लगने का सिलसिला तब से शुरू हुआ था और आज भी जारी है। उस वक़्त तक मैंने आग से प्रभावित जगह को देखा भी नहीं था। सच पूछें तो उस हिसाब से मैं इन मुद्दों से जुड़ी भी नहीं थी। तब तो मुझे केवल मेरे सर्वे के काम से मतलब था। कितना घर जल गया है, क्या-क्या नुकसान हुआ है? इन सब चीज़ों की जानकारी नहीं मिली थी। लेकिन धीरे- धीरे मैंने *जागोरी* के कामों को समझा।

दिसम्बर में सोलह दिवसीय हिंसा विरोधी अभियान के तहत बवाना में आयोजित होनेवाले कार्यक्रम की तैयारी चल रही थी। दो दिन पहले पोस्टर कार्यशाला और उसके दो दिन बाद एक रैली आयोजित की गई। सब कुछ तय हो गया था। उस दिन *जागोरी* के बहुत से साथी बवाना में मौजूद थे। अचानक साथी समूह की एक लड़की चिल्लाई- ''आग आग. ..।'' खिड़की की तरफ़ जाकर देखा तो ई-ब्लॉक में भयानक आग लगी हुई थी। काला धुंआ आसमान को मानो निगल रहा हो। यह दृश्य मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मन विचलित हो गया। सारे प्रोग्राम धरे के धरे रह गये।

मैं और मेरी एक अन्य सहकर्मी मोनिका इस आशा में घटनास्थल की तरफ भागे कि शायद उन लोगों के किसी काम आ सकें। पर जब हम वहां पहुंचे तो कुछ भी हमारे हाथ में नहीं था। आग इतनी भयानक थी कि सर्दी में भी पसीना आ रहा था। सब लोग अपने सामान को बचाने की कोशिश में लगे हुए थे। बिजली के खम्बे तक भी आग पहुंच चुकी थी। लोगों ने होशियारी के साथ तुरंत ही बिजली के तार काट दिये, वरना आग और भी गम्भीर रूप ले सकती थी। दमकल स्टेशन में खबर पहुंच चुकी थी। लगभग 40 मिनट बाद दमकल की गाड़ी आयी। तब तक जो होना था वह हो चुका था। लगभग 350 झुग्गियां नष्ट हो चुकी थीं। इनमें से 275 के आसपास झुग्गियां जल चुकी थीं और बाकी जलने के डर से तोड़ दी गई थीं। अजीब सी स्थिति थी। किसके बच्चे कहां है किसी को पता नहीं। शुक्र है कोई हताहत नहीं हुआ था। हां, छोटी-मोटी चोटें ज़रूर आई थी। देर से पहुंचने के कारण दमकलवालों के ऊपर लोगों का काफ़ी गुस्सा था।

जैसा कि पता चला, एक झुग्गी में एक औरत और उसके पांच बच्चे किराये पर रहते थे। औरत भीख मांगकर घर चलाती थी क्योंकि उसका पति उसे छोड़ कर चला गया था। बड़ी लड़की खाना बनाने के दौरान कुछ लेने के लिए दुकान गयी हुई थी। छोटे भाई-बहनों ने चूल्हे की लकड़ी से खेलना शुरू कर दिया और देखते ही देखते घर की दीवार और छत के प्लास्टिक में आग लग गयी और आसपास की झुग्गियां भी इसकी चपेट में आ गईं। सुनने में आया कि उस

औरत को लोगों ने मार-मार कर उस ब्लॉक से निकाल ही दिया। ख़ैर लगभग सारी संस्थाओं ने इस आगजनी के बाद राहत के लिए कोशिश की ताकि बवाना के लोगों को कुछ मदद मिल सके।
13 फरवरी 2007 को ई-ब्लॉक के दूसरे हिस्से में दोबारा आग लगी। कड़ाके की ठंड थी। सब सो रहे थे। मैं भी रजाई में थी। मोबाइल पर एसएमएस आया। उठ कर देखने की ज़रूरत भी नहीं समझी। सुबह उठकर देखा तो पता चला कि फिर से आग लग गयी है बवाना में। यह आग लगभग रात साढ़े ग्यारह से पौने बारह के बीच लगी थी। दमकल की गाड़ी जल्दी नहीं पहुंच पाने के कारण लोगों का गुस्सा दमकलकर्मियों के ऊपर बरस पड़ा। कुछ लोगों ने उनकी बहुत पिटाई की। कुछ के तो हाथ-पैर तक भी तोड़ डाले। बाद में पता चला कि मारनेवाले लोगों में कोई भी उस ब्लॉक का नहीं था। वे लोग कौन थे इस विषय में और जानकारी नहीं मिल पाई। इस बार आग कैसे लगी कोई ठीक से बता नहीं पाया।

जिस घर से आग लगी थी उस घर की औरत का कहना था कि उनके घर में पति और बच्चे थे और वह खुद पुरानी दिल्ली में थी। रात में पति टीवी देख रहा था। अचानक टीवी ब्लास्ट होने के कारण आग लगी। तब से ही यह आग हादसा नहीं बल्कि साजिश के रूप में दिमाग में शक बन कर बैठ गया कि टीवी ब्लास्ट होकर आग कैसे लग सकती है? इस बार लोगों की तरफ़ से रिलीफ़ का काम कम चलाया गया। लगभग 200 घर आग की चपेट में आ गये थे। ठीक इसके पहले आग बुझाने की ट्रेनिंग (Fire disaster managment training) के लिये *जागोरी* ने दमकल दफ़्तर में बातचीत करके आयोजन की तैयारी की थी। ट्रेनिंग की तारीख भी लगभग तय हो गयी थी, और यह उम्मीद थी कि इस ट्रेनिंग को 27 फरवरी 2007 को अंजाम दिया जायेगा।

26 फरवरी सुबह चार बजे बवाना के जागोरी दफ़्तर से जुही का फोन आया कि डी ब्लॉक में आग लग गयी है। जहां जहां खबर देनी थी दे दी। फिर मैं सोचने लगी कि करूं तो क्या करूं! क्योंकि इससे पहले ही अफ़वाह फैल चुकी थी कि अब डी ब्लॉक में आग लगेगी और हुआ भी वही। आश्चर्य की बात है कि इस बार ज़्यादातर *जागोरी* की निगरानी समिति की औरतों के घर जले। लगभग 250 घर जल गए थे। इस बार कोई संस्था मदद नहीं कर पाई। सरकार के स्तर पर जितना होता है बस उतना ही। पक्के मकान वाले झुग्गीवासियों पर आरोप लगा रहे थे कि इन झुग्गियों की वजह से ही आग लगती है। इसलिए अब इस ब्लॉक में झुग्गियां नहीं बनाने दी जाएंगी।

यह आग हमारे साथी समूह की एक लड़की के घर से लगी थी। दो दिन बाद उसकी शादी थी। घर में गांव से आये उसकी दीदी और जीजा सो रहे थे। आग कैसे लगी यह उन्हें भी नहीं मालूम। आसपास के लोगों के गुस्से का सामना उसकी मां कर रही थी। पर इस बार एक अच्छी खबर यह थी की लोगों ने गुस्से में आकर दमकलकर्मियों के ऊपर हमला नहीं किया और न ही किसी को करने दिया। कुछ लोगों का कहना था की ज़रूर दाल में कुछ काला है। पर क्या, यह किसी को समझ में नहीं आ रहा था। इसी तरह से ए ब्लॉक, उसके बाद सी ब्लॉक में भी आग लगी। एक के बाद एक ब्लॉक में आग लगने का सिलसिला जारी रहा। बहुत साधारण बात है कि लगातार आग लगने के कारण संस्थाएं कोई मदद कर पाने की स्थिति में नहीं थी।

ए ब्लॉक में आग लगने का कारण कुछ ऐसा था। फूस के घर में सुबह के समय कोई खाना बना रहा था। स्टोव जलते हुए छोड़कर वह आदमी बाहर गया। उतनी देर में आग की लपट ने फूस को पकड़ लिया। सुबह चार बजे के समय सब सो रहे थे। लोग जब तक समझते तब तक आग फैल गयी।

सी ब्लॉक में आग भरी दोपहर में लगी। उस दिन *जागोरी* की हिंसा विरोधी टीम उसी गली में काम कर रही थी। *जागोरी* दफ़्तर में उस दिन सपोर्ट ग्रुप मीटिंग थी। इस सिलसिले में जुही, मोनिका और नन्दिनी उसी गली में थी। अचानक जुही ने देखा की एक आग का गोला हवा में उड़ गया और आग फैल गई। पता चला कि जिस झुग्गी से आग फैली वहां कोई नहीं था। गली में ज़्यादातर घरों मे कोई नहीं था। जो लोग थे वे सब घर में सो रहे थे। बच्चे खेल रहे थे। कहां से आग लगी किसी को ठीक से पता नहीं। इस बार दो जानें गईं। दोनों ही मानसिक रूप से विकलांग थे। एक लड़का जिसकी उम्र 9-10 साल और एक लड़की जिसकी उम्र 19-20 साल थी। उस वक़्त वहां जो भी हो रहा था उसकी

समझ उन दोनों को नहीं थी। अगले दिन किसका घर जलेगा किसी को नहीं पता, सब दहशत में है। हम लोगों की कोशिश से अब सरकारी रिलिफ 1000/- से 2000/- हो गया है। पर बेहतर तो यह है कि आग ही न लगे।

अजीब बात यह है कि एक ब्लॉक में आग लगने के बाद अगला नम्बर किस ब्लॉक का है यह पहले ही तय हो जाता है। लोगों ने सतर्कता बरतते हुये रात में चौकीदारी शुरू कर दी तो दिन में ही आग लग गई यह भी मुमकिन है। बहुत सारे सवाल सामने आते हैं। क्या यह जमीन के दलालों का काम है? क्या झुग्गीवालों को भगाने का एक तरीका है? झुग्गीवाले क्या कुछ सामान और रिलीफ़ फ़ंड के 1000/-रु के लिए अपना घर जला देंगे? यह क्या सच में सारे हादसे हैं? अगर नहीं तो क्या है इसका राज? इसके पीछे कौन है? किसको ज़्यादा फ़ायदा पहुंच रहा है? इसमें तथाकथित राजनैतिक रंग तो नहीं है? कौन बीच रास्ते में आते हुये दमकल गाड़ी को रोकता है ताकि आग और तबाही मचा सके।